अध्याय - चतुर्थ

अध्याय – चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1	प्रस्तावना
4.2	प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

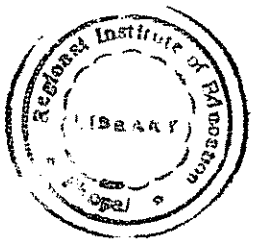

अध्याय – चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना :–

अध्ययन हेतु चयनित उपकरण के माध्यम से चुने गये न्यादर्श द्वारा प्रदत्त का संकलन किया गया तत्पश्चात् प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण तथा व्याख्या इस अध्याय में की गई। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं के स्वीकृति हेतु प्रदत्तों को समूह व उपसमूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है। जो नवीन सिद्धांत की खोज अथवा सामान्यीकरण रूप से होता है। प्रदत्तों विश्लेषण के अंतर्गत उनकी उपलब्धियों की तुलना अनेक परीक्षण द्वारा कर शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निष्पातियों द्वारा किया जाता है।

प्रस्तुत अध्याय में उचित सांख्यिकी विधियों का उपयोग करे प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया जाता है। इस शोध अध्ययन में कुल 10 परिकल्पनायें रखी गई है। जिसकी जाँच करने और उपरांत त्वरित प्रदत्तों के प्रस्तुतीकरण के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की गई है।

पी.ही.युंग के शब्दों में संकलित तथ्यों के उचित संस्थिति संबंधी के रूप व्यवस्थित कर विचारपूर्ण आधारशिला की स्थापना करना ही विश्लेषण है अर्थात् विश्लेषण शोध का सृजनात्मक पक्ष है।

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.2.1 उद्देश्य :–

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

तालिका 4.2.1

शिक्षा के अधिकार प्रति जागरूकता परीक्षण के प्राप्तांक का आवृत्ति विवरण

प्राप्तांक	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
20	1	1.0	1.0
21	2	2.0	3.0
23	2	2.0	5.0
24	6	6.0	11.0
25	11	11.0	22.0
26	11	11.0	33.0
27	7	7.0	40.0
28	10	10.0	50.0
29	16	16.0	66.0
30	8	8.0	74.0
31	16	16.0	90.0
32	7	7.0	97.0
33	3	3.0	100.0
योग	**100**	**100**	

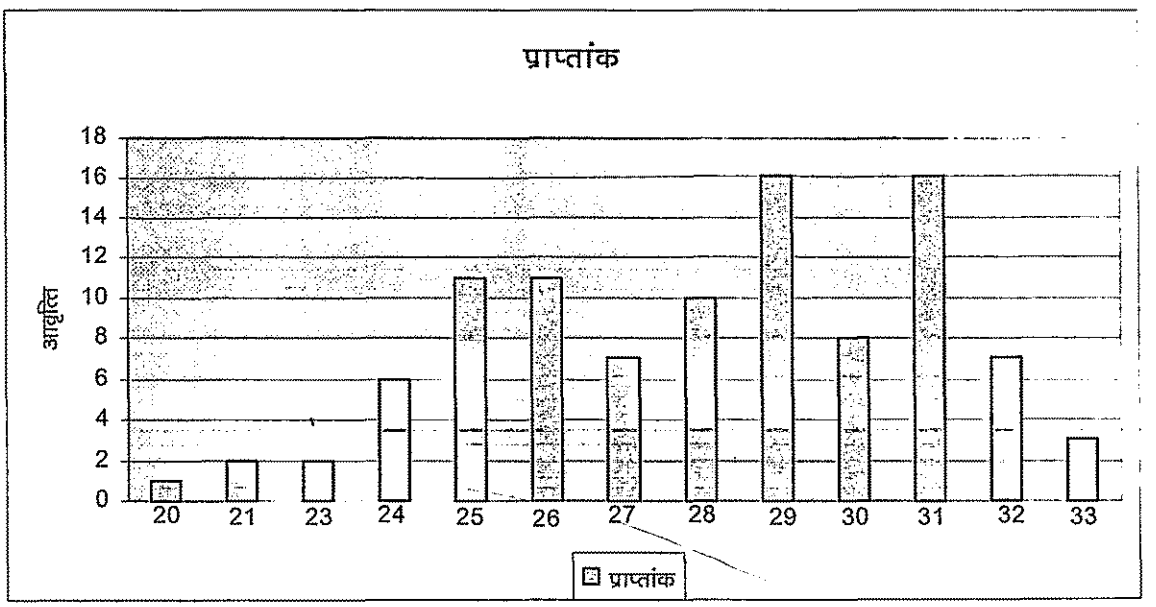

आकृति 4.2.1

R.T.E. जागरूकता परीक्षण के प्राप्तांक एवं आवृत्तियों का स्तभांकृति ग्राफ

तालिका 4.2.2

प्राथमिक विद्यालायें के अध्यापकों की शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता स्तर

प्राप्तांक का विस्तार	अध्यापकों की संख्या	प्रतिशत	ज्ञान स्तर
32-33	10	10 %	बहुत अच्छा
28-31	50	50%	अच्छा
23-27	37	37%	औसतम
18-21	3	3%	कम

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 100 अध्यापकों में से 10 प्रतिशत अध्यापकों का शिक्षा के अधिकार के प्रति ज्ञान स्तर बहुत अच्छा है। 50 प्रतिशत अध्यापकों का ज्ञान अच्छा है। 37 प्रतिशत अध्यापकों का स्तर औसतम है तथा 3 प्रतिशत अध्यापकों का ज्ञान स्तर बहुत कम है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि 60 प्रतिशत अध्यापक शिक्षा के अधिकार के प्रति अच्छी तरह जागरूक है। तथा 40 प्रतिशत अध्यापकों की जागरूकता औसतन है।

4.2.3 परिकल्पना :– 1

अध्यापक तथा अध्यापिकाओं में शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' का परीक्षण का उपयोग किया गया और इसका विवरण तालिका 4.2.4 में दर्शाया है।

तालिका 4.2.4

शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता परीक्षण के प्राप्तांक व लिंग के सार्थकता अंतर का विवरण –

चर	(लिंग)	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df
RTE जागरूकता	अध्यापक	72	27.75	2.72	0.0227	98
	अध्यापिका	28	29.17	2.67		

- 't' मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अध्यापक तथा अध्यापिकाओं में शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 0.022, df 98 है। 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि अध्यापक तथा अध्यापिकाओं की शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। यह निष्कर्ष ''पांडे सरोज'' (1997) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.5 परिकल्पना :– 2

अध्यापक तथा अध्यापिकाओं में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.6 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.2.6

शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण, परीक्षण के प्राप्तांक व लिंग, के सार्थकता अंतर का विवरण –

चर	(लिंग)	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df
RTE दृष्टिकोण	अध्यापक	72	50.41	1.67	0.482	98
	अध्यापिका	28	50	2.86		

- 't' मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अध्यापक तथा अध्यापिकाओं में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 0.482, df 98 है। 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि अध्यापक तथा अध्यापिकाओं की शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। यह निष्कर्ष ''पांडे सरोज'' (1997) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.7 परिकल्पना :- 3

ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.8 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.2.8

शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता, परीक्षण के प्राप्तांक व क्षेत्र, के सार्थकता अंतर का विवरण –

चर	क्षेत्र (लिंग)	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df
RTE जागरूकता	ग्रामीण	50	27.94	2.95	0.455	98
	शहरी	50	28.36	2.75		

- 't' मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों की शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 0.455, df 98 है। 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं हाने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी की शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। यह निष्कर्ष ''डॉ. निरंजन अरध्या'' (1985) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.9 परिकल्पना :- 4

ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.10 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.2.10

शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण, परीक्षण के प्राप्तांक व क्षेत्र, के सार्थकता अंतर का विवरण –

चर	क्षेत्र (लिंग)	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df
RTE जागरूकता	ग्रामीण	50	50.44	1.49	0.507	98
	शहरी	50	50.16	2.53		

- 't' मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 0.507, df 98 है। 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी की शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। यह निष्कर्ष "डॉ. निरंजन अरध्या" (1985) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.11 परिकल्पना :- 5

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.12 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.2.12

शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता, परीक्षण के प्राप्तांक व क्षेत्र, के सार्थकता अंतर का विवरण –

चर	क्षेत्र (लिंग)	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df
RTE जागरूकता	शासकीय	50	28.32	2.58	0.546	98
	अशासकीय	50	27.98	2.95		

- 't' मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के अध्यापकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 0.546, df 98 है। 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के अध्यापकों में की शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। यह निष्कर्ष ''अरूणा कश्यप'' (1999) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.13 परिकल्पना :- 6

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.14 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.2.14

R.T.E. दृष्टिकोण परीक्षण के प्राप्तांक व शासकीय, अशासकीय अध्यापकों के सार्थकता अंतर का विवरण –

चर	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df
RTE दृष्टिकोण	शासकीय	50	50.34	2.47	0.849	98
	अशासकीय	50	50.26	1.61		

- 't' मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के अध्यापकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिाकेण परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 0.849, df 98 है। 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। यह निष्कर्ष ''अरूणा कश्यप'' (1999) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.15 परिकल्पना :- 7

अध्यापकों तथा पालकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.16 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.2.16

R.T.E. जागरूकता परीक्षण के प्राप्तांक व अध्यापकों एवं पालकों के सार्थकता अंतर का विवरण –

चर	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df
RTE जागरूकता	अध्यापक	100	28.15	2.78	6.92	198
	पालक	100	25.79	3.12		

- 't' मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है।

अध्यापक तथा पालकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 6.92, df 98 है। 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक होने की वजह से शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के अधिकार के प्रति अध्यापकों की जागरूकता पालकों के जागरूकता से अधिक है। यह निष्कर्ष ''सुश्री याज'' (2002) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.17 परिकल्पना :- 8

अध्यापकों तथा पालकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.18 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.2.18

R.T.E. दृष्टिकोण परीक्षण के प्राप्तांक व अध्यापकों एवं पालकों के सार्थकता अंतर का विवरण –

चर	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df
RTE दृष्टिकोण	अध्यापक	100	50.30	2.085	0.0068	198
	पालक	100	49.47	2.18		

- 't' मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अध्यापक तथा पालकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिाकोण परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 0.0068, df 98 है। 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि अध्यापक तथा पालकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यह निष्कर्ष "सुश्री याज" (2002) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.19 परिकल्पना :- 9

ग्रामीण एवं शहरी पालकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.20 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.2.20

R.T.E. जागरूकता परीक्षण के प्राप्तांक व क्षेत्र के सार्थकता अंतर का विवरण –

चर	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df
RTE जागरूकता	ग्रामीण	50	25.92	2.42	0.681	98
	शहरी	50	25.66	3.69		

- 't' मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

ग्रामीण एवं शहरी पालकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 0.681, df 98 है। 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी पालकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यह निष्कर्ष "सरोज पांडे" (1997) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.21 परिकल्पना :- 10

ग्रामीण एवं शहरी पालकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.22 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.2.22

R.T.E. दृष्टिकोण परीक्षण के प्राप्तांक व क्षेत्र के सार्थकता अंतर का विवरण –

चर	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df
RTE दृष्टिकोण	ग्रामीण	50	49.44	1.651	0.89	98
	शहरी	50	49.50	2.617		

- 't' मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

ग्रामीण एवं शहरी पालकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 0.89, df 98 है। 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी पालकों में शिक्षा के अधिकार के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यह निष्कर्ष ''सरोज पांडे'' (1997) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।